

# मध्यकालीन भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया: एक अध्ययन (1206–1707)



ममता  
(शोधछात्रा)  
मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास  
विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय  
इलाहाबाद

नगरीकरण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो अधिवासित प्रारूप में गत्यात्मक परिवर्तन लाता है। यह परिवर्तन मूलतः जनसंख्या, आकार, संरचना और कार्यिक क्षेत्र में होता है।

यदि भारत के परिप्रेक्ष्य में अवलोकन करें तो नगरीकरण की प्रक्रिया भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही प्रारम्भ मानी जाती है जिसकी जानकारी हमें सिन्धु सभ्यता से मिलती है। सिन्धु सभ्यता के कुछ शहर जैसे हड्ड्या, मोहनजोदहो, धौलावीरा आदि नगर अपनी उत्कृष्ट नगर नियोजन एवं जलनिकासी की व्यवस्था के लिये प्रसिद्ध थे। सिन्धु घाटी सभ्यता को प्रथम नगरीय सभ्यता भी कहा जाता है। अन्य नगरों में मिथिला, हस्तिनापुर, मथुरा, कौशाम्बी, पाटलिपुत्र, कुशीनगर आदि का भी महत्वपूर्ण स्थान है। ई०प०० छठी और सांतवी शताब्दी को क्रमशः द्वितीय शहरीकरण के रूप में देखा जाता है।

मध्यकाल में मुस्लिम शासन की स्थापना से नगरों का विकास पुनः प्रारम्भ हो गया। भारतीय नगर-नियोजन में मुस्लिमों के योगदान के रूप में उनकी सुन्दर और विशाल मस्जिदें उनके दरवाजे, गुम्बद, मेहराब और नगर के चारों ओर एक संशोधित रक्षा प्राचीरें जो कि अधिक कुशलतापूर्वक सैनिक उपकरणों से सुसज्जित थी, इत्यादि शामिल हैं।

मध्यकाल में जब तुर्क लोग भारत आये उसके सामने तीन प्रमुख रुकावटें आयी। यहाँ अच्छी सड़के नहीं थी, संचार के साधनों का अभाव था, फारसी बोलने वाले ऐसे अधिकारियों की बहुत कमी थी जो जनता और राज्य के बीच सेतु का काम कर पाते। ग्रामीण क्षेत्रों में मुस्लिम आबादी नगण्य थी जो नवस्थापित तुर्की राज्य का आधार बन सकती।<sup>1</sup>

यद्यपि नगरीकरण की प्रक्रिया तुर्कों के आने से पहले ही विद्यमान थी। यद्यपि तुर्कों के आने से इस प्रक्रिया में तेजी आयी। इस संदर्भ में इतिहासकार मो० हबीब ने 13वीं-14वीं शताब्दी में हुयी शहरीक्रान्ति से सम्बन्धित सामान्य सिद्धान्त, प्रतिपादित किया। उनके

अनुसार तुर्कों के आने से पूर्व भारत में उच्च वर्गों ने शहरों में अपना कब्जा जमा रखा था जब कि श्रमिक लोग गाँवों और शहरों के परकोटे के बाहर बस्तियों में रहते थे।<sup>2</sup> तुर्कों के आने के बाद यह भेद क्रमशः मिट गया क्योंकि उनको औद्योगिक उपक्रमों के लिये उनकी जरूरत थी। अतः नगरों में धीरे-धीरे उद्योग और व्यापार में वृद्धि हुयी। अतः मुहम्मद हबीब के अनुसार नगरीय क्रान्ति लाने में तुर्क शासक वर्ग की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही। मुहम्मद हबीब के अनुसार यह महान परिवर्तन विशेष रूप से दिल्ली शहर के तेजी से होने वाले विकास में परिलक्षित हुआ प्रो। हबीब यह तो मानते हैं कि नगरों की संख्या और संभवतः उनके आकार में वृद्धि हुयी लेकिन वे यह नहीं मानते कि तुर्कों की अधीनता में शहरी क्रमिकों या गाँव के कृषकों एवं कारीगरों को अधिक स्वतन्त्रता मिली। वे इस मत को भी स्वीकार नहीं करते कि 'उत्पादन के उपकरणों' में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। वे मानते हैं कि इस अवधि के दौरान प्रौद्योगिकी में आवश्यक परिवर्तन और सुधार हुये।

मुगलकाल के दौरान नगरीकरण की प्रक्रिया में तेजी आयी। कुछ पुराने शहरों का विकास हुआ तथा कुछ नये शहर स्थापित हुये और यह प्रक्रिया लगभग 18वीं शदी तक जारी रही। इसके अलावा दक्षिण में बीजापुर, गोलकुण्डा, आदि नगर भी विकसित हुये तथा मसूलीपटनम् जैसे नये शहर भी बसे।

मध्यकालीन सामाजिक और आर्थिक प्रगति में नगरीकरण का बहुत ही व्यापक महत्व है। मध्यकाल में जातिव्यवस्था की अनम्यता के फलस्वरूप नगर बहुधर्मी थे तथा नगरों में मिश्रित आबादी रहती थी जिसके परिणामस्वरूप मिश्रित संस्कृति का भी विकास हुआ। नये महल, राजधानी घर बनते रहे और नगरों का विकास होता रहा। मध्यकालीन शहरी जनसंख्या के संदर्भ में अभी हाल के एक अनुमान के अनुसार 17वीं शताब्दी तक देश की कुल आबादी की लगभग 15% शहरों में रहती थी। अकबर के साम्राज्य में लगभग 120 बड़े शहर और 3200 कस्बे थे।<sup>3</sup>

जहाँ तक मध्यकालीन नगरीय समाज का प्रश्न है तो हम देखते हैं कि उस समय कारीगरों दासों, कर्मचारियों, व्यापारियों आदि का प्राधान्य था। शहरी क्षेत्रों में कुछ ऐसे लोग भी शामिल थे जो ग्रामीण क्षेत्रों की वस्तुओं को शहर में पहुँचाते थे।<sup>4</sup> मध्यकालीन भारत में व्यापारी वर्ग के अतिरिक्त नगरों में लेखक, इतिहासकार, संगीतकार, चित्रकार, दार्शनिक, चिकित्सक आदि हुआ करते थे। शहरों में कारीगर उतने ही जरूरी थे जितने की गाँवों में कृषक। ये लोग नगरों के आर्थिक जीवन के आधार थे और उनके द्वारा उत्पादित वस्तुओं के द्वारा ही नगर आत्मनिर्भरता हासिल कर सकता था।<sup>5</sup> कारीगर वस्त्र उद्योग, जहाज निर्माण, कागज निर्माण तथा शहरी कारखानों में काम करते थे।

मध्यकालीन भारत में हम नगरों के अलग—अलग स्वरूप को देख सकते हैं—

राजधानी वाले नगर वे नगर थे जहाँ से प्रशासनिक गतिविधियाँ देखी जाती थी जैसे दिल्ली, आगरा लाहौर आदि। इसके अतिरिक्त कुछ नगर अपने तीर्थ स्थलों के कारण प्रसिद्ध थे जैसे—अजमेर मथुरा बनारस, इलाहाबाद आदि। कुछ औद्योगिक नगर भी थे जैसे—पटना, सूरत, आगरा आदि। कुछ ऐसे नगर भी थे जो किसी विशिष्ट वस्तुओं के लिये प्रसिद्ध थे जैसे बयाना नील के लिये, अवध सूतीवस्त्र के लिये गुजरात, लाहौर, मुल्तान आदि वस्त्र उद्योग के लिये प्रसिद्ध थे।

कुछ विद्वानों का यह मानना है कि मध्यकालीन भारत के नगरों का यूरोप के शहरों की तरह अपना कोई कानून नहीं था। किन्तु यह विचार उचित नहीं प्रतीत होता क्योंकि मध्यकालीन भारत के नगरों का सामान्य प्रशासन कोतवाल के हाथों में होता था। नगरों में शान्ति व्यवस्था बनाये रखने के लिये उसके पास रक्षा तथा पहरेदारी के लिये अपने कर्मचारी रहते थे। इसके अतिरिक्त वह विशेष मामलों में फौजदार से भी मदद माँग सकता था। नगरों में मापतौल पर नियंत्रण करना कीमतों पर नजर रखना, अवैध शुल्कों पर रोक लगाना कोतवाल का दायित्व था। इसके अतिरिक्त नागरिक सुविधा सम्बन्धित कई जिम्मेदारियां भी उसे निभानी पड़ती थी।<sup>6</sup>

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि मध्यकाल के प्रारम्भ से लेकर 18वीं शताब्दी तक नगरों का क्रमिक विकास देखने को मिलता है। इस दौरान व्यापार तथा वाणिज्य के क्षेत्र में लघु उद्योगों का भी विकास हुआ। इसके अतिरिक्त इस काल के दौरान सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, क्षेत्र में शहरीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता आयी। कुछ पुराने शहर विकसित हुये कुछ नये शहर बसे। इस प्रकार नगरीकरण के क्षेत्र में यह क्रमिक विकास हमें 13वीं—18वीं शताब्दी तक निरन्तर देखने को मिलता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. हरिश्चन्द्र वर्मा मध्यकालीन भारत भाग—1 पृष्ठ संख्या—407
2. विस्तार के लिये देखे मुगलकालीन भारत अंक—तीन, दिल्ली 2003, पृष्ठ संख्या—10—31
3. निजामुद्दीन अहमद: तबकाते अकबरी, अंग्रेजी अनुवाद बी0डे0 भाग—3 कलकत्ता, 1936
4. घनश्याम दत्त शर्मा: मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थायें जयपुर 2001, पृष्ठ संख्या—29—93

5. घनश्याम दत्त शर्मा: मध्यकालीन भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं  
राजनीतिक संस्थायें जयपुर 2001, पृष्ठ संख्या—51